दममदार बेड़ापार

इस्लामी मालूमात मय

आसान सीरत-ए-मदार पाक

हिस्सा दोम

(सवाल व जवाब के आईने में)

अज़ क़लम

पीरे तरीकत मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती

सैयद निसार हुसैन जाफ़री मदारी

नादिर मिस्बाही मद्दाज़िल्लहुल आली दारुन्नूर

یہ کتاب Www.madaarimedia.Com سے ڈاؤن لوڈ کی گئی ہے

MADAARI MEDIA

دم مدار بیڑا پار

The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح

سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں

سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات

سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

दममदार बेड़ापार

(इस्लामी मालूमात मय)

आसान सीरत ऐ मदार पाक (हिस्सा दोम)

सवाल व जवाब के आइने में

अज़ क़लम

पीरे तरीक़त मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सैय्यद

निसार हुसैन जाफ़री मदारी

नादिर मिस्बाहि मद्दाज़िल्लहुल आली

दारुन्नूर मकन पुर शरीफ़ ज़िला कानपुर यूपी.

09760422993

मिलने का पता

मेहदिऐ मिल्लत स्टेशनरी मोहम्मद पुर बहेड़ी बरेली यूपी

रूपये 35.00

یہ کتاب Www.madaarimedia.Com سے ڈاؤن لوڈ کی گئی ہے

(जुमला बहुकूक़ नाशिर महफ़ूज़)

मोअल्लिफ : पीरे तरीक़त मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सैय्यद निसार हुसैन क़िबला जाफ़री मदारी मद्दाज़िल्लहुल आली

पुरुफ़ रीडिंग साहब ज़ादा सैय्यद मोहम्मद वसीम शामी मदारी व हाफ़िज़ मोहम्मद शाहिद मदारी बहेड़ी

वसीम जाफ़री मिस्बाही मदारी, बहेड़ी

तादाद बार अव्वल 1000

बार दोम1000 फ़रवरी2017

जुमादल ऊला 1438 हिजरी

(हसबे फ़रमाइश)

शहेज़ादगान सादाते मकनपुर शरीफ़ व हज़रत सज्जादह नशीन साहिब क़िब्ला व नाशिरे मसलक इमामे आज़म मौलाना हाफ़िज़ मो0 फ़ारुक़ साहब मदारी नवाबगंज बरेली शरीफ़

Scanned by CamScanner

नात शरीफ़

कलाम : आबरु ए शेरो सुख़न हस्सानुल हिन्द हज़रत अल्लामा सय्यद मोअज्ज़ हुसैन अदीब मकन पुर अलैहिर्रहमा

आखों से आंसू मेरी तैबा में जुदा होंगें
मेहरुम अंजुमन से ताबिश में सिवा होंगें

जोश आएगा रहमत को दर खुल्द के वां होंगे
सजदे में मोहम्मद जब मसरुफ़े दुआ होंगे

जब अदना गुलाम उनके कौनैन के मालिक हैं
सरकार मदीना ख़ुद जानिए किया होंगे

टूटे हुए दिल वाले महबूब मुहम्मद हैं
महबूबे मोहम्मद ही महबूबे ख़ुदा होंगे

आएगा जवानी पर ये ज़ौक़ जबीं साइ
सजदे दरे रहमत पर जब आपके अदा होंगे

अच्छी नहीं इतनी आज़ादह रवी तेरी
ए जुर्अत रिन्दाना सरकार ख़फ़ा होंगे

लिन्लाह मेरी हालत सरकार से कह देना
एहसान तेरे मुझ पर ए बादे सबा होंगे

मांगेंगे अदीब उनसे खुद उनको उन्ही से हम
सरकारे मदीना जब माइल बा अता होंगे

Scanned by CamScanner

तअस्सुर

अज़.पीरे तरीक़त शहज़दे तौक़ीरे मिल्लत हज़रत अल्लामा मौलाना सैय्यद तशरीफ़ हसन साहिब क़िबला जाफ़री मदारी दारुन्नूर मकन पुर शरीफ़ मेरे अज़ीज़ भाई हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सैय्यद निसार हुसैन जाफ़री मदारी आला ज़हन और साफ़सुथरी फ़िक्र के मालिक हैं सवाल व जवाब के आईने में सरकार मदारुल आलमीन सय्यद बदीउद्दीन ज़िंदाशाह मदार रज़िअल्लाहु अनहु और सिलसिले आलिया के उमूर पर उसी सादगी के साथ बड़े ख़ूबसरत और सहल अंदाज़ में बहुत अच्छी तहरीर पेश की है जो लाइक़े तक़लीद है।

सय्यद मो0 तशरीफ़ हसन जाफ़री मदारी सदफ़ मिस्बाही

आस्ताने आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़,

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस किताब का पहला हिस्सा आसान सीरते मदारे पाक जो लोग पढ़ चुके हैं और वो हज़रात जो सीरत व सवानेह औलिया ए काम पढ़ते रहते हैं ख़ूब जानते हैं की सरकार मदारे पाक हज़रत सुल्तानुल आरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी रज़िअल्लाहु तआला अनहु के मुरीद व ख़लीफ़ा और ताबई बुज़ुर्ग हैं जो तबलीगे़ दीन के लिए282 में अरब शरीफ़ से हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए आप के चौदहसौ बयालिस ख़ुल्फ़ा हुए **1442** हज़रत सैयदुल मुत्तक़ीन ख़्वाजा सय्यद मो0 अरगू़न हज़रत ख़ुआजा सय्यद अबुतुराब मनसूर हज़रत ख़्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफूर आप के जानशीन और ख़लीफ़ा हैं जुमला सादात मकनपुर शरीफ़ उन्ही की औलाद से हैं (नजमुल हुदा शजरातुल औलिया ए किराम सफ़रनामा मिराअतुल अनसाब तज़किरातुल मुत्तक़ीन तोहफ़तुल मदारिया व गै़रा) सरकार मदार पाक कि उमर शरीफ़ तक़रीबन पांचसौ छियानवे साल और विसाल **17**जमादियुल उला**838**हिजरी में हुआ तफ़सील के लिए आप की सवानेह हयात की किताबें पढ़ें या इस किताब का पहला हिस्सा पढ़ें आप का सिलसिले तरीक़ अमीरुल मूमिनीन हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ और अमीरुल मूमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहू तक पहुचंता है और बतौरे अक़ीदत अमीरुल मूमिनीन हज़रत उमर फ़ारुक़ आज़म और अमीरुल मूमिनीन हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाहु अनहुमा के ज़िके जमील से आसान सीरत मदारपाक का आग़ाज़ कर रहा हूं क़ब्ल ये किताब क़ुतबुल

Scanned by CamScanner

मदार एकेडमी दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़ ने अज़मते सहाबा मदारी कांफ्रेस में मदार इशाअत घर से छपवाकर मुफ़्त तक़सीम की है नाचीज़ दुआ करता है कि अल्लाह तआला इस दीनी और मिल्ली ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमा ए आमीन अब मज़ीद इज़ाफ़ के साथ ये दूसरा एडिशन आप के सामने है इस किताब में अगर कोई ख़ामी और ग़ल्ती पाएं तो मुत्तला फ़रमाएं क़ाबिले तवज्जोह हज़रात की इस्लाह व इत्तिला पर ग़ौर कर के अमल किया जाएगा अगर किताबत की ग़ल्ती हो तो उससे भी बाख़बर फ़रमाएं नवाज़िश होगी

फ़क़्त वस्सलाम
नादिर मिस्बाहि मकनपुरी।

Scanned by CamScanner

.नात शरीफ़

कलाम ;उस्तादुश्शुअरा हस्सानुल हिन्द हज़रत अल्लामा ख़्वाजा सैय्यद मिस्बाहुल मुराद साहब क़िब्ला जाफ़री मदारी दामत बरकातुहुमुल आलिया।

राज़िक़ नही हो क़ासिमे फ़ज़्ले खुदा तो हो
तुम ख़ालिक़े जहां नहीं ख़ैरुल वरा तो हो

मसजूद तो नहीं हो मगर मुद्दआ तो हो
काबा नहीं हो क़िब्ले अहले वफ़ा तो हो

दोगे गुनाहगारों को परवान ए निजात
मुन्सिफ़ नहीं हो शाफ़े रोज़े जज़ा तो हो

वल्लाह तुम इलाह नहीं मेरे मुस्तफ़ा
नूरे उलूहियत का हसीं आइना तो हो

खुदही संभाल लोगे जो मैं डगमगाऊंगा
तुम राहे ज़िंदगी में मेरे रहनुमा तो हो

दम तोड़देंगी कुफ़रु जिहालत की ज़ुल्मतें
रोशन ज़रा जहां में शमा हिरा तो हो

मेसबाह जाके गुंबदे ख़ज़रा की छाओं में
ऱदादे ग़म सुनाऊं मैं इज़्ने नवा तो हो

Scanned by CamScanner

मनक़बत शरीफ़

कलाम :अमीरुश्शुअरा पीरेतरीक़त हज़रत सैय्यद क़मर
आदिल सोज़ मकनपुरी अलैहिर्रहमा

हर एक वली कड़ी तेरी ज़ंजीर का लगे
हर सिलसिले से आला तेरा सिलसिला लगे

सूरत पे हुस्ने ज़ात का पर तो जलवागर
सीरत तुम्हरी सीरते ख़ौरुल वरा लगे

हम अज़मते मदार के गुन गाएंगे सदा
चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा लगे

आक़ा हमारे आप हैं हम आप के ग़ुलाम
उड़ कर ना कैसे आपकी हमको दुआ लग

उसको बलाए गरदिशे दौरां ना छूसके
जो भी मेरे मदार के क़दमों से जा लगे

जिस घर में ज़िक्र होता है ज़िंदा मदार का
वो घर तो सोज़ वाक़ई रहमत कदा लगे

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सललि अला मुहम्मदिन व आला सय्यदिना मुहम्मदिन व बारिक वसल्लिम

ज़िक्र : अमीरुल मूमिनीन हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अनहु कब और कहां पैदा हुए?

जवाब : 573ईसवी मक्का में पैदा हुए

सवाल : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ का इस्लाम क़ुबूल करने से पहले किया नाम था?

जवाब :अब्दुल काबा

सवाल :हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ का इस्लाम लाने के बाद किया नाम रखा गया और उनका लक़ब और कुन्नियत किया रखी गई?

जवाब :अब्दुल्लाह नाम और कुन्नियत अबूबकर लक़ब सिद्दीक़ हुआ

सवाल : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के वालिद का नाम और कुन्नियत बताइ ए?

जवाब : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के वालिद का नाम उसमान है जो बेटे हैं आमिर के और कुन्नियत अबुक़हाफ़ा है

सवाल : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के दादा का नाम बताइ ए?

जवाब : आमिर

सवाल : हज़रत अबूबकर के प्रदादा का नाम बताइ ए?

Scanned by CamScanner

जवाब : अमर और उन के वालिद का नाम अब्दउल काबा है

सवाल : हज़रत अबूबकर की वालिदा का नाम किया है?

जवाब : सलमा

सवाल : हज़रत अबूबकर के वालिद का नाम बताओ?

जवाब : सख़्र बिन अमर

सवाल : हज़रत अबूबकर कब ईमान लाए?

जवाब : ए लाने नबुव्वत के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तरग़ीब देने पर

सवाल : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ ने कितनी शादियां कीं?

जवाब : चार

सवाल : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के कितने बच्चे थे?

जवाब : तीन अब्दुल्लाह अब्दुर्रहमान और मोहम्मद

सवाल : हज़रत अबूबकर की कितनी बच्चियां थीं?

जवाब : आयशा असमा उम्मे कुसूम

सवाल : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ कब ख़लीफ़ा बनाए गए?

जवाब : 12 रबीउल अव्वल 11हिजरी 7जनवरी632ईसवी

सवाल : पीरी और मुरीदी के हिसाब से आप के ख़लीफ़ा कौन ़जुर्ग हुए?

जवाब : हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार रज़िअल्लाहु अनहु के कौन ख़लीफ़ा हैं?

Scanned by CamScanner

जवाब : हज़रत ऐनुददीनल रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : हज़रत ऐनुददीन रज़िअल्लाहु अनहु की तारीख़ पैदाइश और उन की वफ़ात की तारीख़ किया है?

जवाब : आप 21शव्वाल 99हिजरी जुमेरात के दिन पैदा हुए और 7रजब 203हिजरी में आपकी वफ़ात हुई (तवारीख़ आईने तसव्वुफ156)

सवाल : हज़रत ऐनुददीन रज़िअल्लाहु अनहु के कौन ख़लीफ़ा हुए?

जवाब : सुल्तानुल आरिफ़ीन हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रज़िअल्लाहु अनहु सवाल : हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रज़िअल्लाहु अनहु की तारीख़े विलादत किया है और आपकी तारीख़े वफ़ात किया है और आप का मज़ार शरीफ़ कहां है और आप के मशहूर ख़लीफ़ा कौन हैं?

जवाब : 5रबीउल आख़िर 87 हिजरी जुमेरात के दिन मग़रिब के बाद पैदा हुए और 27रजब 262हिजरी में आपकी वफ़ात हुई मज़ार शरीफ़ बुस्ताम है (तवारीख़ आईने तसव्वुफ़156) और आपके मशहूर ख़लीफ़ा कुत्बे वहदत हज़रत सय्यद अहमद बदीउददीन मदारुल आलमीन रज़िअल्लाहु अनहु हैं और आपके जानशीने अव्वल हज़रत ख़ुआजा सय्यद मो0 अरगून रज़िअल्लाहु अनहु हैं।

ज़िक : अमीरुल मूमिनीन हज़रत उमर फ़ारुक़ रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : फ़ारुक़ किस का लक़ब है और कियों?

जवाब : हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अनहु का और इसकी वजह ऐ लानिया इस्लाम की तबलीग़ व इशाअत है और एक मशहूर वाक़िया भी है

Scanned by CamScanner

सवाल : वो मशहूर वाक़िया किया है?

जवाब : वो ये है कि एक यहूदी और मुनाफ़िक़ के दरमियान किसी बात पर झगड़ा हुआ मामला सरकार नबी पाक अलैहिस्सलाम के पास लाया गया यहूदी अपनी बात में हक़ पर था लिहाज़ा फ़ैसला यहूदी के हक़ में हुआ मुनाफ़िक़ ने वो फ़ैसला ना माना और यहूदी से कहा कि उमर के पास चलो वो फ़ैसला करेंगे आख़िर कार दोनो हज़रत के पास आए मामला उन के सामने रखा यहूदी ने हज़रत उमर को हुजूर अलैहिस्सलाम का फ़ैसला भी बता दिया और कहा की इसने हुजूर अलैहिस्सलाम के फ़ैसले को नहीं माना हज़रत उमर घर के अंदर गए तलवार उठा कर लाए और मुनाफ़िक़ की गर्दन क़लम करदी और कहा जो अल्लाह और उसके रसूल का फ़ैसला नहीं मानता उसके लिए उमर का यही फ़ैसला है जब सरकार नबी पाक को पता चला तो हुजूर अलैहिस्सलाम ने आप का लक़ब फ़ारुक़ रखा (तफ़सीरे ख़ाज़िन सफ़ा 397 ज़ख़ीरा सफ़ा49)

सवाल : हज़रत उमर के वालिद का नाम किया है?

जवाब : आपके वालिद का नाम ख़त्ताब है

सवाल : हज़रत उमर ने कितने साल ख़िलाफ़त की?

जवाब : दस बरस (तारीख़े इस्लाम) और बाज़ ने कहा है कि हज़रत उमर की ख़िलाफ़त दस साल छ माह और पांच रात या तेरह दिन रही (हयातुल हैवान सफ़ा 75)

सवाल : वो चीज़ें जिनकी इब्तिदा हज़रत उमर से हुई वो कौन सी है?

जवाब : 1नमाज़ में ज़ोर से बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम 2पढ़ना सबसे पहले अमीरुल मूमिनीन का लक़ब आप के साथ इस्तेमाल

Scanned by CamScanner

हुआ 3ज़माने नबवी में ऐ लानिया इबादत करने का ऐ लान आपने ही किया 4सबसे पहले शराब पीने वाले पर सज़ा का हुक्म आपने ही जारी किया 5हिजरी की इब्तिदा आपने की 6क़ाजी़ और उनकी तन्ख़ुआह आपने मुक़र्र की 7मस्जिद में सफ़ बिछाना आपसे ही जारी हुआ 8इस्लाम में सबसे पैमाना आपने ही जारी किया 10पहरा लगाना और सरकारी काम के लिए दफ़्तर बनाना आपही से मनसूब काम कहलाए जाते हैं

सवाल : वो कौनसे फ़रुक़ी बुजुर्ग हैं जिनसे मदीना शरीफ़ में हज़रत सरकार मदारपाक ने फ़ैज़ हासिल किया और हदीस सुनी?

जवाब : वो हज़रत औफ़ा फा़रुक़ी रज़िअल्लाहु अनहु हैं (सफ़रनामा ज़िंदा शाह मदार सफ़ा 20)

ज़िक : अमीरुल मूमिनीन हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : ज़ुन्नूरैन किस का लक़ब है और ये लक़ब किस वजह से हुआ?

जवाब : ये हज़रत उसमान का लक़ब है इसलिए की उन के निकाह में हुज़ूर नबीए पाक की यके बाद दीगरे दो बेटियां आईं

सवाल : हुज़ूर नबी ए पाक के ज़माने में जुमे के लिए एक अज़ान होती थी फ़िर अज़ाने सानी का आग़ाज़ किस के ज़माने से हुआ और कियों?

जवाब : हज़रत उसमाने ग़नी ने जुमे की अज़ाने सानी का आग़ाज़ इस वजह से कराया की लोग हुज़ूर नबी ए पाक अलैहिस्सलाम के ज़माने के ऐ तबार से ज़्यादा हो गए थे और उन में सुस्ति पैदा हो गई थी जुमे की अहमियत की वजह से हज़रत उसमाने ग़नी ने अपने इज्तिहाद और सहाबै किाम के इत्तिफ़ाक़ से अज़ाने सानी का आग़ाज़ कराया (बुख़ारी शरीफ़)

Scanned by CamScanner

सवाल : वो चीज़ें जिनकी इब्तिदा हज़रत उसमान से हुई कौन कौन सी हैं?

जवाब : सबसे पहले मस्जिद में पर्दे लटकवाने वाले हज़रत उसमान हैं (मिराअतुल हरमैन सफ़ा 235)

सवाल : किया अज़ाने देने वालों को तन्ख़ुआह सबसे पहले हज़रत उसमान ने दी? जवाब : हां (तारीख़ुल ख़ुल्फ़ा137)

सवाल आपके ज़माने में .कौन कौन सी चीज़ें जारी हुई?

जवाब सबसे पहले पुलिस तय्यार करने वाले आप ही हैं और चरागाह खुदवाने वाले आप ही हैं और क़ुरआन को तरतीब देने वाले आप ही हैं (तारीख़ुल ख़ुल्फ़ा)

सवाल : हज़रत उसमान की ख़िलाफ़त कितने साल तक रही?

जवाब : इसमे तीन अक़्वाल हैं 1हज़रत उसमान की ख़िलाफ़त बारह दिन कम बारह साल रही 2 ग्यारह साल ग्यारह माह चौदह दिन रही 3 बारह साल है (हयातुल हैवान सफ़ा 78जिल्द 1)

सवाल : हज़रत उसमान को शहीद करने वाला कौन शख़्स है?

जवाब : किनाना बिन बशीर (तारीख़े इस्लाम सफ़ा414)

सवाल : हज़रत उसमाने ग़नी की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाब : हज़रत जुबैर बिन मुतइम ने पढ़ाई (हयातुल हैवान सफ़ा78)

सवाल : वो कौन उसमानी बुजुग है जिनसे सरकार मदारपाक ने फ़ैज़ हासिल किया और कहां?

Scanned by CamScanner

जवाब : वो बुजुग हज़रत अब्दुल्लाह बिन हमज़ा उसमानी हैं मदीना शरीफ़ में आप से मुलाक़ात हुई (सफ़रनामा सफ़ा 20)

ज़िक : अमीरुल मूमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहू हुल करीम कब और कहां पैदा हुए?

जवाब : 13रजब 600ईसवी में काबा शरीफ़ में पैदा हुए (मुकम्मल तारीख़े इस्लाम)

सवाल : हज़रत अबू तालिब ने आप का नाम किया तज़वीज़ किया था?

जवाब : ज़ैद

सवाल : हज़रत अली की वालिदा ने किया नाम तज़वीज़ किया था?

जवाब : असद , हैदर

सवाल : हुज़ूर अलैहि व आलिहिस्सलातु व स्सलाम ने किया नाम रखा?

जवाब : अली

सवाल : हज़रत अली के वालिद का नाम किया है?

जवाब : हज़रत अबू तालिब

सवाल : आपकी वालिदा नाम किया है?

जवाब : आपकी वालिदा का नाम फ़ातिमा बिन्ते असद है

सवाल : हज़रत अली की दादी का नाम बताओ?

जवाब : फ़ातिमा बिन्ते अमर बिन आइद

सवाल : हज़रत अली के नाना का नाम बताओ?

Scanned by CamScanner

जवाब : असद बिन हाशिम

सवाल : हज़रत अली की नानी का नाम बताओ?

जवाब : आतिका

सवाल :हज़रत अली के मुख़्तसर औसाफ़ और अक़वाल बयान की जिए?

जवाब : हज़रत अली कर्रमल लाहु वजहु हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी चचाज़ाद भाई हैं लड़कों में सबसे पहले ईमान लाए और आप दामाद हैं रसूलुल्लाह के इब्ने

अब्बास से रिवायत है की रसूलुल्ला सल्ललाहु अलैहिवसल्लम ने फ़रमाया मै इल्म का शहर हूं और अली उसका दरवाज़ा तो जो शहर का इरादा करे दरवाज़े पर आए एक मर्तबा आपने इल्म की फ़ज़ीलत में फ़रमाया इल्म को माल पर सात वजह से फ़ज़ीलत हासिल है.

अव्वल : ये की इल्म पैग़म्बरों की मीरास है और माल फ़िरऔन हामान शदा्द और नमरुद की मीरास है

दोम : ये की इल्म ख़र्च करने से कम नहीं होता बल्कि ज़्यादा होता है और माल ख़र्च करने से घटता है

सोम : ये की माल को निगेहबानों की हाजत है और इल्म ख़ुद आदमी का निगेहबान होता है

चहारुम : ये की जब आदमी मरता है तो माल छोड़जाता है और इल्म उसके साथ जाता क़बर में जाता है

पंजुम : ये की माल ऐसी नेमत है जो मोमिन के हाथ से काफ़िर के हाथ में चली जाती है और इल्म का नफ़ा ईमानदार को हासिल होता है

Scanned by CamScanner

शशुम : ये की कोई फ़िरक़र ऐसा नहीं जिसको दीनी उमूर में आलिम की ज़रुरत ना हो और ऐसे फ़िरक़े बहुत हैं कि जिनको मालदारों की कोई हाजत नहीं होती

नोट : मौला अली के इस फ़रमाने आलिशान की रोशन दलील सिलसिले आलिया मदारिया है सादात मशाइख़ मकनपुर शरीफ़ और मलनंगान काम और फ़ुक़रा ए मदारिया को देख लीजि ए

हफ़्तुम : ये की क़यामत में इल्म पुलसिरात पर गुज़र ने की क़ूव्वत देगा और माल कमज़ोरी और ज़वाल का सबब होगा

सवाल : हज़रत अली रज़िअल्लाहु अनहु के कितने बच्चेथे ?

जवाब : 14या 18

सवाल : हज़रत अली की कितनी बच्चियां थीं?

जवाब : 14या 18

सवाल : हज़रत अली कब ख़लीफ़ा बनाये गए?

जवाब : 24 ज़िलज्जिा 35 हिजरी जून656 ईसवी में

सवाल : हज़रत अली की पहली बैअत किसने फ़रमाई?

जवाब : हज़रत तलहा रज़िअल्लाहु अनहु ने

सवाल : फ़त्हे मक्का के अलमबरदार का नाम बताइ ए?

जवाब : हज़रत अली

सवाल : हज़रत अली ने मसनदे ख़िलाफ़त पर बैठते ही पहला किया काम किया?

Scanned by CamScanner

जवाब : ऐश परस्त हाकिमों को इस्लामी सूबों की हुकूमत से हटा दिया

सवाल : हज़रत अली रज़िअल्लाहु अनहु कितनी उमर में ख़लीफ़ा बने?

जवाब : 55साल की उमर में

सवाल : हज़रत अली ने दारुल हुकूमत किस शहर को बनाया?

जवाब : कूफ़ा को 36हिजरी में

सवाल : हज़रत अली पर पहला नाकाम हमला किसने किया?

जवाब ; शबीब बिन बहरा ने

सवाल : हज़रत अली पर दूसरा हमला किस ने और कहां किया?

जवाब : इब्ने मुलजिम ने पेशानी मुबारक पर

सवाल : हज़रत अली की कब शहादत हुई?

जवाब : 21रमज़ान40हिजरी 28जनवरी 661ईसवी में शहादत हुई

सवाल : आपकी शहादत कितनी उमर में हुई तिरेसठ साल या इकसठ साल या साठ साल?

जवाब : तिरेसठ साल

सवाल : आप कितनी मुद्दत तक ख़लीफ़ा रहे?

जवाब : चार साल नौ माह

सवाल : हज़रत अली को किसने गुसल दिया?

Scanned by CamScanner

जवाब : हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम और हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम हज़रत अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु अनहु ने

सवाल : हज़रत अली की नमाज़ जनाज़ा किस ने पढ़ाई?

जवाब : हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने

सवाल : हज़रत अली के मुशीरे ख़ास कौन थे?

जवाब : हुजूर अलैहिस्सलाम के गुलाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन राफ़े रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : हज़रत अली का मज़ार कहां है?

जवाब : मशहूर रिवायत के मुताबिक़ नजफ़ शरीफ़ में

सवाल : हज़रत अली के मज़ार शरीफ़ पर पहला गुंबद कब और किसने बनवाया?

जवाब ; ख़लीफ़ा हारुन रशीद ने 170 हिजरी में

सवाल ; हज़रत अली के बाद कौन ख़लीफ़ा बनाये गए?

जवाब : हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम (हवाला तारीख़े इस्लाम मुकम्मल तारीख़े इस्लाम तारीख़ुल ख़लफ़ा व गैरा)

Scanned by CamScanner

नज़रे अक़ीदत

पेशकरदा :रजीयुल हुसैन जाफ़री बहुजूर मौलाए कायनात हज़रत अली कर्रमल लाहु वजहू हुल करीम

समझा हि नहीं कोई कि किया शाने अली है बस सरवरे क़ौनैन को इरफ़ाने अली है

एक ज़ात में है इल्मो हुनर अदलो शुजाअत दुनिया में नहीं कोई भी हमशाने अली है

सरकार उन्हें अन्ता अख़ी कह के पुकारें किया शाने अली शाने अली शाने अली है

सूरज की तमाज़त हो की रोजे़ क़यामत हर हाल में हासिल मुझे दामने अली है

देता है ख़ुदा रिज़्क़ तेरे सदक़े में मौला मख़लूके़ ख़ुदा वाक़ई महमाने अली है

नादिर :वही तो है फ़ातिमा ज़ोहरा का दुलारा शब्बीर जिसे कहते हैं वो जाने अली है सय्यद निसार हुसैन: नादिर मिस्बाहि

सवाल : तरीक़त में चार पीर कौन कौन से बुज़ुर्ग कहलाते है?

जवाब : सूफ़िआ किाम फ़रमाते है की हज़रत मौला मुशकिल कुशा ने70सत्तर हज़रात को ख़िरक़ै ख़िलाफ़त अता फ़रमाया था और उन सत्तर हज़रात ने पहले चार पीर मुक़र्र फ़रमाए

पहले : पीर हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाहु अनहु

दूसरे : पीर हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

तीसरे : पीर कुमैल बिन ज़ियाद रज़िअल्लाहु अनहु

Scanned by CamScanner

चौथे : पीर हज़रत हसन बसरी रिज़वानुल्लाही तआला अन्हुम अजमईन

सवाल : हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम कि तारीख़े विलादत किया है और आप की तारीख़े शहादत किया है?

जवाब : आप15रमज़ान 3हिजरी को पैदाइश हुई और आपकी शहादत 59हिजरी को हुई

सवाल : हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम कब पैदा हुए और कब शहादत हुई?

जवाब : 4या5शाबान 4हिजरी में पैदा हुए और 10मुहर्रम 61 हिजरी में शहीद हुए

सवाल : हज़रत कुमैल बिन ज़ियाद रज़िअल्लाहु अनहु कौन थे?

जवाब : आप हज़रत अली के मुसाहिब और ख़लीफ़ा थे (सय्यदुल अक़्ताब)

सबाल : इन चार पीरों से जिन ख़ानदानों का इजरा हुआ उनके किया नाम है?

जवाब : वो नौ क़ादिर और पांच चिश्त कहलाते हैं (शमसुल अफ़लाक)

सवाल : वो नौ क़ादिर कौन से हैं और किन किन बुज़ुर्गों से मनसूब हैं?

जवाब : वो नौ क़ादिर ये हैं 1हबीबियान ख़्वाजा हबीब अजमी से2तैफ़ूरियान हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी तैफ़ूर शामी से 3करख़ियान ख्वाजा मारुफ़ करख़ी से 4सुक़तियान ख़्वाजा सिर्रि सुक्ति से 5जुनैदिय ख्वाजा जुनैद बग़दादी से 6गाज़रियान ख्वाजा अबु इसहाक़ गारज़नी से 7तौसीयान

Scanned by CamScanner

ख्वाजा अबूयुसुफ़ अलाउद्दीन तौसी से 8फ़िरदौसियान ख्वाजा नजमुद्दीन कुबरा से 9सुहर वरदियान ख्वाजा अबू नजीब सोहरवरदी से

सवाल : पांच चिश्त कौन से है?

जवाब : पांच चिश्त ये है 1ज़ैदियान ख्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद से 2अयाज़ियान ख़ुआजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ से 3अदहमयान ख्वाजा इबराहीम बिन अदहम से 4हुबैरियान ख्वाजा हुबैरा बसरी से 5चिश्तियान ख्वाजा अबू इसहाक़ चिश्ती से (हवाला सलासिल और ख़ानवादे मिस्बाहुल फ़ुक़रा शमसुल अफ़लाक)

सवाल : ख़ानवादै तैफ़ूरिया से कै सिलसिले जारी हुए?

लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह

सवाल : सिलसिले की असल कौन है?

जवाब : सिलसिले मदारिया. शत्तारिया. नक़्शबंदिया. सिलसिले मदारिया कई और वास्तों से हज़रत मौला तक पहुंचता है जिसका बयान आगे आता है

सवाल : मोमिन का असल सिलसिला किया है?

जवाब : तमाम सिलसिलो की असल हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम हैं?

सवाल : ख़ुल्फ़ाए राशिदीन में से कौनसे ख़लीफ़ा से ख़ानवादे और सिलसिले जारी हुए?

जवाब : हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ से और मौला अली कर्रमल्लाहु वजहु से सलासिल व ख़ान वादों का इजरा हुआ

Scanned by CamScanner

हज़रत सय्यदिना अबूबकर सिद्दीक़ अकबर रज़िअल्लाहु अनहु से सिलसिले सिद्दीक़िया का इजरा हुआ जिस्में मदारिया शत्तारिया नक़्शबंदिया व ग़ैरा और हज़रत मौला अलीयुल मुर्तज़ा से चार पीर और चौदह ख़ानवादों का इजरा हुआ (सय्यदुल अक़्ताब)

सवाल : किया हज़रत हसन बसरी ने अमीरुल मुमिनीन हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अनहु से भी फ़ैज़ पाया है?

जवाब : हां लताइफ़े अशरफ़ी उर्दू दोम 41

सवाल : हज़रत उमर फ़ारुक़ आज़म के वसीले से कितने ख़ानवादे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचते है?

जवाब : चार (लताइफ़े अशरफ़ी जिल्द दो40)

सवाल : पीरी मुरीदी के सिलसिले जो इस वक़्त जारी हैं और रुशदो हिदायत के ये तरीक़त बा क़ाएदा किस की तहरीक से शुरु हुआ?

जवाब : लताइफ़े अशरफ़ी में है सय्यद अशरफ़ रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते थे की जब ख़ुल्फ़ा ए राशिदीन का अहद गुज़र गया और सहाबा भी गुज़र गये तो उलमा ने कहा की अब कोई बुजुर्ग बाक़ी नहीं है जो मुक़्तदा बनाए जायें और दूसरों को राहे हक़ की हिदायत करें तब इमामे आज़म रज़िअल्लाहु अनहुमा वग़ैरा ने तै किया कि अब ख़ुल्फ़ा ए राशिदीन के क़ाएम मुक़ाम हों उनकी पैरवी करना चाहिए हज़रत अली के ख़लीफ़ा हज़रत ख्वाजा हसन बसरी मौजूद थे सब उलमा ताबईन ने उनकी तरफ़ रुख़ किया और उनसे बैअत की पीरी मुरीदी का सिलसिला उसी वक़्त से शुरु हुआ (लताइफ़े अशरफ़ी उर्दू हिस्सा दोम 39)

सवाल : इससे पहले किया तरीक़ा था ये फ़ैज़ हासिल करने का ?

Scanned by CamScanner

जवाब : इससे पहले सिर्फ़ बैअत या ख़िदमत में हाज़री का दस्तूर था जिस्को शर्फ़े सोहबत कहते हैं (लताइफ़े अशरफ़ी उर्दू हिस्सा दोम 39)

सवाल : इसकी कोई मिसाल?

जवाब : इसकी मिसालें बहुत हैं मिसाल के तौर पर हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी सरकार गौसे पाक रज़िअल्लाहु अनहु और सरकार ख्वाजा ग़रीब नवाज़ की मुलाक़ातों ही को देख लीजिए सरकार मदार पाक जब बग़दाद पहुंचे तो सरकार ग़ौसे पाक रज़िअल्लाहु अनहु पर जलाली कैफ़ियत तारी थी सरकार मदारे पाक ने मुलाहज़ा फ़रमा कर हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतों का ज़िक्र किया फ़ौरन सरकार ग़ौसेपाक का जलाल कम हो गया (जमाले मदारियत बहावाला बहर ज़ख़ार व ग़ैरा)

और कोकला पहाड़ी पर सरकार ख्वाजा ग़रीब नवाज़ की मुलाक़ात इस तरह की कसीर मिसालें एक बुज़ुर्ग का दूसरे बुज़ुर्ग से फ़ैज़ पाना बल्कि शरीअत व तरीक़त व ग़ैरा और इल्म व ज़ाहिर व बातिन के हिस्सों का यही राइज तरीक़ा है हिन्दी ज़बान में इसी को कहते हैं बिन गुरु ग्यान नहीं

क़तआ

पेश कर्दा सय्यद फ़ैज़ुल हुसैन मदारी

फ़ैली है उनसे निकहत फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा

शादाब हर चमन है उन्ही की बहार से

चिश्ति व क़ादरी व सोहर वरदी व नक़्श बंद

वा बस्ता सब हैं दामने क़ुत्बुल मदार से

Scanned by CamScanner

इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की रुह से फ़ैज़याब है (मदारे आज़म बदीऊल अजाएब)

सवाल : ये कैसे मालूम हुआ कि आप हुजूर अलैहिस्सलाम से उवैसी हैं?

जवाब : आपने ख़ुद इरशाद फ़रमाया जिसके रावी आप के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत सय्यदिना महमूद कन्तूरी रज़िअल्लाहु अनहु हैं उन्हों ने अर्ज़ किया हुजूर अपना शजरा लिखवा दीजिए आपने फ़रमाया लिखये अपना नाम फ़िर मेरा नाम फ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम (तोहफ़तुल मदारिया वगैरा)

सवाल : बाज़ बुजुर्गों का ख़्याल है कि आप हज़रत सुल्तानुल आरिफ़ीन बा यज़ीद बुस्तामी से उवैसी हैं?

जवाब : आप अल्लाह के वलियों में निस्बत उवैसियत के साथ जो कि बहुत ख़ास विलायत का मक़ाम है इस्से मशहूर हैं और आप मुरीद व ख़लीफ़ा भी हज़रत तैफ़ूर शामी के हैं ये भी तवातुर से साबित है ये सब को ख़ूब पता है औलिया अल्लाह के शजरे गवाह है और ये की आप की पैदाइश के बारे में इख़्तिलाफ़ भी काफ़ी है जिस्से बाज़ बुज़ुर्गों का मुशतबाह हो जाना कोई तअज्जुब कि बात नहीं उलमा ए हक़ और मुहक़्क़ीन की तहक़ीक़ यही है की आप हुजूर अलैहिस्सलाम से उवैसी हैं यानी शार्गिदे नबी ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रज़िअल्लाहु अनहु के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं

सवाल : हज़रत तैफ़ूर शामी के पीर का किया नाम है और उनकी तारीख़े वफ़ात किया है?

Scanned by CamScanner

जवाब : हज़रत हबीब अजमी रज़िअल्लाहु अनहू और आप हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ से भी इजाज़त व ख़िलाफ़त याफ़ता हैं हज़रत हबीब अजमी की वफ़ात की तारीख़ 13रबी उस्सानी है मज़ार बग़दाद में है (तज़किातुल औलिया)

सवाल हज़रत हबीब अजमी के पीर का किया नाम है?

जवाब : हसन बसरी रज़िअल्लाहु अनहु जिनका विसाल 13 रजब 110 हिजरी में हुआ तारीख़ आईने तसव्वुफ़)

सवाल : सरकार सय्यद बदीउद्दीन मदारुल आलमीन ने मक्का और मदीना के कित्ने बुज़ुर्गो से फ़ैज़ हासिल किया ?

जवाब : सरकार मदारपाक ने मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ में रहने वाले बहुत से बुज़ुर्गों से फ़ैज़ हासिल किया है जिन्की सही तादाद मालूम नहीं बाज़ बुज़ुर्गो ने बाक़ाईदा आप के शजरात भी लिखे हैं एसे ही शजरात नवादिरा को मुलाहज़ा करके बहुत से अहले क़लम बुज़ुर्ग सहू और ख़ता का शिकार भी हुए हैं कि आप के शजरात रुशदो हिदायत को देख कर आप का नसबी शजरा समझ बैठे और बाद वाले बिला तहक़ीक़ कुछ का कुछ लिख बैठे

सवाल : कुछ लोग कहते हैं की सरकार मादरे पाक रज़िअल्लाहु अनहु और सरकार गौसे पाक रज़िअल्लाहु अनहु और सरकार साबिर पाक रज़िअल्लाहु अनहु सय्यद नहीं हैं?

जवाब : ये वो लोग हैं जो मौला अली कर्रमल लाहु वजहु को सय्यद नहीं मानते (मआज़अल्लाह) तो वो सरकार मदारेपाक या सरकार गौसे पाक या सरकार साबिर पाक को किया सय्यद मानेंगे जब्कि सरकार मदारे पाक ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं अना हलबियुन बदीउद्दीन इस्मी व जद्दी मुस्तफ़ा सुल्ताने

Scanned by CamScanner

दारैन मुहम्मदुन व अहमदु महमूदू कौनैन। यानी मैं हल्ब का रहने वाला हूं मेरे नाना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और मेरे दादा अली हैं तो दूसरे किसी को किया हक़ है की वो आप के सय्यद होने का इन्कार करे फ़िर ये की बात वही मोतबर होती है की कहने वाले ने अपनी बात कही और सुनने वाले ने सुनी और अपना देखा सुना किसी ने बयान किया मैं सय्यद निसार हुसैन जाफ़री मदारी दलील के तौर पर एक बात पेश कर्रहा हूं इस उम्मीद के साथ की जो लोग आप के सय्यदि होने का इनकार कर रहे हैं वो अल्लाह के अज़ीम वली गुलशने फ़ातिमा के फूल सय्यद आले रसूल सय्यद बदीउद्दीन अहमद मदार के दिल को दुखाने से बाज़ आजाऐं हुजूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि लोग अपने नसब पर ख़ुद अमीन हैं अब सवाल ये है कि सरकार मदारेपाक का ये फ़रमान कहां से साबित है की मैं सय्यद हूं इसकी असल किया है?

तो देखये आपके ख़ानदान वालों से ये बात साबित है और दूसरे ये की किताब का नाम है तनवीरुल मदार जो सरकार मदारेपाक के पहले जानशीन हज़रत ख्वाजा सय्यद मो0 अरगून के साहब ज़ादे सय्यद अबुल फ़ाइज़ मोहम्मद की तहरीर है फ़रमाते हैं की मैंने बारगाहे जद्दे ग्रामी (सरकार मदारे पाक) में अर्ज़ किया की आप अपना शजरा लिखवा दीजिए तो आपने फ़रमाया लिखो बदीउद्दीन अहमद जाफ़री बिन क़ुदवतुद्दीन अली जाफ़री मदनी बहाउद्दीन हुसैन जाफ़री जैसा कि इस किताब के पहले हिस्से में दर्ज है और आपकी सीरत की किताबों में मरकूम है फ़िर फ़रमाया अपना शजरा भी लिखो फ़िर उन्हों ने अपना शजरा भी लिखा जो तनवीरुल मदार के आख़िर में दर्ज है अब इस बात को यूं समझ ये हज़रत अबुल

Scanned by CamScanner

अरगून रज़िअल्लाहु अनहु के वो भी वली आप भी वली और वली वही होता है जो बुरी बातों से दूर होता है और तमाम अख़्लाक़े रज़ीला से पाक होता है अब इस्से बेहतर कौनसी दलील पेश की जाएगी सरकार मदारपाक ख़ुद इरशाद फ़रमा रहे हैं की मैं इमाम जाफ़र की औलाद से हूं सुन्ने वाला और लिखने वाला आप का तरबियत याफ़्ता और मुसाहिब और ख्वाजा सय्यद मो0 अरगून ख्वाजा सय्यद अबूतुराब मन्सूर ख्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफूर हज़रत ख्वाजा सय्यदी क़ाज़ी लहरी हज़रत शेख़ इलयास हज़रत ख्वाजा शेख़ ताज हज़रत शिहाबुद्दीन क़दवाई परकालै आतिश हज़रत सय्यद अजमल बहराईची हज़रत ख्वाजा अबुल मुजफ़्फ़र हज़रत सय्यद दरया सईद जैसे औलिआ ए किाम की मौजूदगी हज़रत ख्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी हज़रत ख्वाजा हमीद नागोरी रज़िअल्लाहु अनहुम व ग़ैरहुम ये सबके सब सरकार बदीउद्दीन मदारुल आलमीन रज़िअल्लाहु अनहु को सय्यद मानें और उस पर गवाह हों इस बारे में बाज़ रिज़वी मोलवी हज़रात को एतराज़ रहता है जबकी उनहें मालूम होना चाहिए की अश्शाह अहमद रज़ा ख़ां फ़ाज़िले बरेलवी के शजरे मदारिया में जो बुज़ुर्ग ख़लीफ़ा सरकार मदारेपाक सय्यद अजमल बहराईची हैं वो भी सरकार बदीउद्दीन के इस फ़रमान के मिस्दाक़ हैं ये सारे बुज़ुर्ग तो किया और अल्लाह वाले एक झूठी बात पर जमा हो गए रहा ये सवाल जो बाज़ बुज़ुर्गों ने इसके बरअक्स बात कही तो मैं पहले कह चुका हूं की आपके बाज़ रुशदि हज़रात को नसबी शजरा समझ बैठे जिन्हें देख कर बाज़ बाद वाले ग़लत फ़हमी के शिकार हो गए या उन्की किताबों में तहरीफ़ करदी गई

सवाल : आप ने पूरी उमर का रोज़ा रखा तो कुछ दिन वो हैं जिन्में रोज़ा रखना मना है ये तो शरीअत के ख़िलाफ़ है?

Scanned by CamScanner

जवाब : औलिया ए काम के बहुत से मामूलात ऐसे हैं जो बज़ाहिर तो शरीअत के ख़िलाफ़ लगते हैं मगर वो इल्में इलाही में ऐन शरीअत होते हैं हज़रत मौलाना हिसामुद्दीन रज़िअल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं की असहाबे तरीक़त पर जब ऐसे दिन आते हैं तो इशक़े इलाही इतना बढ़जाता है तो वो हालते जज्ब से गुज़र जाते हैं और कभी एसा होता है की वो शरीअत के काम भी करते रहते हैं उन्हें उसकी भी ख़बर नहीं होती और इल्म वाले ख़ूब जानते हैं की हालते जज्ब पर फ़त्वा नहीं

सवाल : जौन पुर में सबसे पहले ख़लीफ़ा आप के कौन बुज़ुर्ग हैं?

जवाब : हज़रत शेख़ सदरुद्दीन साबित मदारी रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : उनकी तारीख़े वफ़ात किया है?

जवाब : 5जमादि उस्सानी841 हिजरी

सवाल : सरकार मदार पाक ने अपने चौदह सौ बयालीस ख़ुल्फ़ा में से कित्ने हज़रात को अपने विसाल से पहले अपनी इजाज़त से नवाज़ कर लोगों की हिदायत और दीन की तबलीग़ के लिए मुल्क में भेजा?

जवाब : सत्तर हज़रात को (सय्यदुल अक़ताब)

फ़ज़ाएल ख़ानदाने मदारिया

सवाल : ख़ानदान किसे कहते हैं?

जवाब : ख़ानदान का माना है ग्रोह जमाअत क़बीला कुंबा वग़ैरह

सवाल : सरकार नबी ए पाक अलैहिस्सलाम और सहाबै काम और अहले बैत के तमाम किया वली भी हैं?

Scanned by CamScanner

जवाब : हां सबके सब वली भी हैं मगर मर्तबा और वस्फ़ अलग अलग है विलायतनबी नबी की विलायत है जिस्की विलायत को कोई विलायत नहीं पहुचंती ऐसे ही सहाबी की विलायत सहाबी की विलायत है और ताबई की विलायत ताबई की विलायत है इन हज़रात की विलायत को किसी की विलायत नहीं पहुंचती सरकार मदारेपाक ताबई भी हैं अब कित्ने ही ऊंचा से ऊंचा वली हो आपकी विलायत को उसकी विलायत नहीं पहुंचती

सवाल : सरकार नबी ए पाक अलैहिस्सलाम तो पैदा होते ही नबी थे जैसा कि हदीस पाक में है कि मैं उस वक़्त भी ज़िंदा था जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मिटटी और पानी के दरमियान थे तो फ़िर वो वली कैसे हुए?

जवाब : हर नबी नबुव्वत के साथ वली होता है और सबसे बड़ा वली वही होता है अल्लाह के बाद (उसूलुल मक़्सूद297)

सवाल : किया हर ज़माने में कुत्ब और मदार होता है?

जवाब : हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अब तक कोई ज़माना इस्से ख़ाली नहीं रहा ज़ाहिरी नबुव्वत से पहले हुजूर नबी ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस ऊंचे मर्तबे पर रहे हैं जिसे मदारियत कहते हैं सय्यदा फ़ातिमा ख़ुल्फ़ा ए राशिदीन को ये मर्त बा हासिल हुआ (ज़रब यदुल लिल्लाही 73मक्तूबात इमाम रब्बानी) फ़ाज़िले बरेलवी लिखते हैं की नबी की विलायत सबसे ऊंची होती है

(अलमलफ़ूज).

हर नबी का वली होना ज़रुरी होता है (रिसालै कुशैरिया)

Scanned by CamScanner

सवाल : किया हज़रत मौला अली की ज़ात इब्तिदा ए कारे विलायत है?

जवाब : हां (मिराअतुल असरार)

सवाल ; सय्यदुल औलिया किस का लक़ब है?

जवाब : मौला ए काएनात अली कर्रमल लाहु वजहू का

सवाल : सारे वलियों की विलायत के मदार कौन हैं?

जवाब : हज़रत अली

फ़ाएदा : औलिया ए काम और उन तमाम मुसलमानों में हज़रत मौला अली की ये निसबत मदारियत मुख़्तलिफ़ नामों इस्तिलाहों और अलक़ाब से मशहूर है मूमिनीन में जो इस सिबत मदारियत के फ़ैज़ान से माला माल हुए और दूसरों तक पहुंचा या उन्हें अल्लाह तआला ने बड़े बड़े मर्तबे और दर्जे अता किए क़ादरियत चिशतियत वग़ैरा ये सब निसबते मदारियत के सिफ़ाती नाम हैं सरकार मदारेपाक से जो इस निसबत का फ़ैज़ान जारी हुआ वो तबक़ै औलिया में अपने उसी ख़ास नाम से आज भी जारी हैं और आम लोगों में उसे सिलसिले मदारियत या ख़ानदाने मदारियत के नाम से जाना जाता है (बक़िया हिस्सा सोम में मुलाहज़ा करेंगे इंशाअल्लाह)

सवाल : किया इसी मर्तबे मदारियत को अइम्मा अहले बैत में इस्तिलाहे ख़ास इमामत से याद किया जाता है?

जवाब : हां (जैसा कि मक्तूबात इमाम रब्बानी के हवाले से ऊपर मज़कूर हुआ)

सवाल : किया सिलेसिले इमामत को ख़ानदाने मदारियत भी कहते हैं?

Scanned by CamScanner

जवाब : हां तरीक़त में इमामत और मदारियत एक ही चीज है थोड़े से फ़र्क़ के साथ

सवाल : वो फ़र्क़ किया है?

जवाब : यूं समझ ये मदारियत को ज़ाहिरी शरीअत में इमामत कहते हैं और तरीक़त में उसी को मदारियत कहते हैं

सवाल : इसका मतलब ये है की मदारियत एक ओहदा और मर्तबा है जो बक़र्दे मर्तबा सारे स़ला सिल में है

जवाब : हां

सवाल ; ये फ़ैज़ मदारियत जिस सिलसिले ख़ास से मनसूब हो कर सारी दुनिया में मशहूर है उसको अवाम व ख़वास किस नाम से याद करते हैं?

जवाब : इसे सिलसिले आलिया मदारिया के नाम से याद करते हैं और ये इस सिलसिले की ख़ास ख़ुसूसियत है जिस्से अहले बसीरत हस्बे फ़हम वाक़िफ़ हैं और सालिकीन की जमाअत उसको अच्छी तरह समझती है

सवाल : हबसे दम किसे कहते हैं और उसका किया फ़ाएदा है?

जवाब : हबस का माना रोकना क़ैद करना दम का माना है सांस ताक़त मदद हबसे दम का माना है सांस का रुक जाना सांस का क़ैद करना ज़िंदगी का ठहराओ सांस पर है कहते हैं जब तक सांस है तबतक आस है अल्लाह तआला ने जितनी सासें जिसकी लिखदी हैं उतनी ही उसकी ज़िंदगी होती है हदीस शरीफ़ में है तुम में सबसे अच्छा वो है जिसका अख़लाक़ अच्छा और उमर तवील हो (बुख़ारी शरीफ़)

Scanned by CamScanner

हदीस शरीफ़ में दो बातें बताइ गई 1अख़लाक़ अच्छा हो 2 उमर तवील हो यानी उमर लमबी हो सलामो कलाम कमज़ोरों की मदद लोगों के काम आना मोहब्बत से मिलना और बोलना वग़ैरा ये अच्छे अख़लाक़ की पहचान है और इन बातों पर आदमी आसानी से अमल कर सकता है लेकिन उमर तवील करने के लिए वो किया करे तो सांसों की जितनी हिफ़ाज़त करेगा उतनी ही ज़िंदगी बढ़ जाएगी उसकी तदबीर हबसे दम है सरकार मदारेपाक मोहब्बते इलाही में इस दरजा मशगूल हो जाते थे कि सांस लेना भी अज़रुए अदब नापसंद फ़रमाते थे और यादे इलाही में सांस लेना भी भूल जाते थे यही वजह है कि फ़ज़्ले इलाही से आपकी उमर लम्बी हुई आपका अख़ालाक़ ख़ुल्के मोहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जिस दम के बारे में कहा जाता है कि दिल के ख़ातरात दूर करने के लिए हबसे दम मुफ़ीद है और इस्से यकसुई हासिल होती है जहां तक हबसे दम का तअल्लुक़ है उसमें कोई शक नहीं की बातिन के गर्म करदेने और जमीअत अज़ीमत और इश्क़ के उभारने और वसवास के क़ता करने में मुफ़ीद है हबसे दम के चंद शराइत हैं जिन पर सरकार मदारे पाक अमल करते रहे हज़रत गैसू दराज़ बंदा नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते थे कि औरत से परहेज़ करना ज़रुरी है खाना पीना बक़र्दे ज़रुरत फ़ुज़ूल बातों से बचना भी ज़रुरी है (क़ौलुल जमील फ़ी बयानी सवाइस्सबील सफ़ा64) मदारपाक ने पांच सौ छप्पन साल ना खाया ना पिया

सवाल : हदीस शरीफ़ में है की मेरी उम्मत में लोगों की उमर साठ या सत्तर के दरमियान होगी तो फिर आकी इतनी लम्बी उमर जैसा कि किताबों में तहरीर है की पांच सौ छिया नवे साल कैसे दुरुस्त मानी जाए?

Scanned by CamScanner

जवाब : हदीस शरीफ़ में अकसरियत मुराद है यानी मेरी उम्मत में लोगों की उमरें आम तौर पर साठ और सत्तर के दरमियान होंगी हदीस शरीफ़ में इस का इन्कार नहीं इस्से ज़ियादा किसी की उमर होगी ही नहीं बल्कि आपने तो ज़ियादा तर उम्मतियों का हाल बयान किया है साठ और सत्तर के अलफ़ाज़ ख़ुद इस तरफ़ इशारा कर रहे हैं हज़रत बाबा रतन बिन साहुक़ हज़रत ख़िाज़र हज़रत इलयास हज़रत सलमान फ़ारसी और बहुत से लोगों की उमर तवील हुई है जिसकी तफ़सील तज़किातुल हुफ़्फ़ाज़ मदारे आज़म तारीख़ मदारे आलम वग़ैरा किताबों में देखी जा सकती है

सवाल : सरकार मदारपाक का अख़्लाक़ कैसा था?

जवाब : सरकार मदारपाक का अख़्लाक़ निहायत पाकीज़ा और सुथरा था इस का अंदाज़ा सिर्फ़ एक बात से लगाया जा सकता है की अब से एक हज़ार साल पहले आप हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए थे जहां ग़ैरुल्लाह की पूजा और इबादत होती थी औहाम परस्ती और सिर्फ़ आसथा ही आसथा थी और उसकी असल कुछ भी ना थी बुत परस्ती आज की तरह आम थी जोगयों का बहुत ज़ोर था आपको एक ऐसी क़ोम समझा ना था जिसकी ज़बान रहन सहन सब कुछ अलग था आप के अच्छे बरताओ और मिलन सारी ने लोगों को आपका ऐसा चाहने वाला बना दिया था की आपकी थोड़ी तवज्जो ही से वो हक़ क़ुबूल करलेते और तमाम बुरी बातों और शिक व कुफ़ से तौबा करलेते बिदअत और गुमराही से बच जाते थे आज भी गैर मुस्लिमों का हाल ये है की आप के दाबार में बहुत अक़ीदत से हाज़िर होते हैं और अपनी मोहब्बत के फूल पेश करते हैं और मुसलमानों के साथ मिलकर दममदार बेड़ा पार

Scanned by CamScanner

का नारा बुलंद करते हैं और अहले ईमान की तो बात ही किया (जमाल मदारियत सीरत मदार वगै़रा)

सवाल : सरकार मदार के आसताने आलिया पर हाज़िर हों तो किया पढ़ें?

जवाब : मज़ार पाक पर हाज़िर हों तो ये पढ़ें (यामदार अल लज़ी ला बिदायता लिज़ातिही वला निहायता लिमुलकिही या मदारद दुनिया वल आख़िरा या मदारस्समावाती वल अर्ज़ (मामूलात अबुल वक़ार सफ़ा7)

सवाल : इस दुआ का तर्जुमा किया है?

जवाब ; तर्जुमा ये है ऐ उसज़ात के मदार जिस ज़ात की इब्तिदा नहीं और जिसके मुल्क की इन्तिहा नहीं ऐ दुनियाओ आख़िरत के अंदर मदार और ऐ आसमानों और ज़मीन के मदार फ़िर दुरुद शरीफ़ पढ़े और अपने पसंदीदा वज़इफ़ में मशगूल हो जाए हज़रत शाह वलि उल्लाह मोहद्दिस देहलवी तहरीर फ़रमाते हैं उस के बाद सात तवाफ़ करे और तकबीर पढ़ता रहे और दाहिनी जानिब से शुरु करे और पांएती की तरफ़ रुख़्सार रखे

सवाल : काबा शरीफ़ के अलावा तवाफ़ करना तो मना है?

जवाब : ये तवाफ़ इस्तिलाही नहीं है जोकी ताज़ीम और तक़र्रुब के लिए किया जाता है जिसकी मुमानिअत नुसूसे शरईया से साबित है बल्कि तवाफ़ लुग्वी है यानी उसके इर्द गिर्द फ़िरनर मुराद है हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ां साहब नईमी अशरफ़ी रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं की क़बरों से फ़ैज़ मिलता है और फ़ैज़ के लिए वहां जाना तवाफ़ करना क़बर को बोसा देना जाइज़ है (जाअलहक़) तवाफ़ के माना हैं धूमना किसी चीज़ के

Scanned by CamScanner

आसपास चक्कर लगाना औलिा ए काम के बारे में अहले सुन्नत का अक़ीदा है की वो ज़िंदा हैं और फ़ैज़ पहुंचाते हैं जब आम वलियों की क़बर का तवाफ़ जाइज़ है तो जो कुत्बुल मदार हो उसके मज़ार पर कैसे नाजाइज़ हो सकता है इसकी मिसाल हज़रत शेख़ मोहम्मद लाहौरी रज़िअल्लाहु अनहु के वाक़ि ए से ख़ूब मिलती है आप शहर लाहौर के रहने वाले थे आलिम व हाफ़िज़ और वाइज़े क़ौम थे जब आप हज करने के लिए चले रास्ते में मालूम हुआ की सरकार मदार पाक गुजरात में हैं तो आप मुलाक़ात के लिए पहुंचे और आप के साथ इबादत व रियाज़त में मसरुफ़ हो गए आप के साथ इबादत में इतना मज़ा और लुत्फ़ पाते ही हिम्मत ना होती थी की कहीं जाऐ आख़िर सारा माल व असबाब ख़ैरात करदिया मगर कभी कभी हज का ख़्याल आता तो परेशानी सी महसूस करते सरकार मदारपाक आपकी दिली आरज़ू समझ गए आपने कहा ऐ शेख़ लाहौरी तुम मेरा तवाफ़ करलो हज हो जाएगा दिल में आरज़ू मौजूद ही थी हुक्म पाते ही फ़ौरन तवाफ़ में मशगूल हो गए तवाफ़ की हालत में देखा की काबा शरीफ़ है तवाफ़ के बाद देखा कि हज़रत की ख़िदमत में मौजूद हैं इस वाक़िए के बाद शेख़ मोहम्मद लाहौरी के दिल में कई बार ख़ायाल आया की ख़ुदा जाने मेरा हज हुआ या नहीं हज़रत ज़िंदा शाह मदार ने आप के इस ख़तरे को महसूस किया दोबारा अय्यामे हज से पहले फ़रमाया शेख़ मोहम्मद यहां आजाओ आप हाज़िर हुए आपने अपना मुबारक हाथ आप के सर पर रख कर हटा लिया शेख़ मोहम्मद ने ख़ुद को मक्का में पाया कानों में आवाज़ आई ए शेख़ जब तक हज ना हो जाए और ज़ियारत मज़ार नबी ना हो जाए वहीं रहना चुनाचे आप पूरे पांच महीने या इक्कीस हफ़्ते हिजाज़ शरीफ़ में रहे जब बक़रा ईद का महीना और की वो

Scanned by CamScanner

अदा किया जब हज हो गया तो आपने ख़ुद को सरकार मदारपाक की ख़िदमत में मौजूद पाया बुज़ुर्गों से मनक़ूल है कि सरकार मदारपाक की हर जाली पर एक मुअक्किल मौजूद है जिस्से फ़ैज़याब होने के लिए ये सात चक्कर लगाए जाते हैं कोई काबा शरीफ़ समझ कर तवाफ़ नहीं करता चाहें किसी भी तवाफ़ करने वाले मुसलमान से पूछ लीजिए

सवाल : सरकार मदारपाक के कौनसे ख़लीफ़ा का लक़ब मलिकुल उलमा है?

जवाब : हज़रत क़ाजी शहाबुद्दीन दौलता बादी रज़िअल्लाहु अनहु का

सवाल : सय्यदुल अक़्ताब में सरकार मदारपाक की एक करामत सफ़ा 36पर इस तरह तहरीर है की शहर काबुल में जब आपकी बुज़ुर्गी का चर्चा हुआ तो एक शख़्स अपनी अंधी लड़की को लेकर ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या हज़रत मेरी एक ही लड़की है जो बदक़िस्मती से अंधी है उस के सिवा कोई औलाद नहीं दुआ कीजिए की उसकी आंखें रोशन हो जाऐं आप ने अल्लाह पाक से दुआ फ़रमाई अल्लाह ने उसको रोशनी बख़्शी और वो अंखयारी हो गई उस लड़की का किया नाम था ?

जवाब : उस लड़की का नाम आमना था और उसके बाप का नाम अब्दुल हई था (सफ़रनामा सफ़ा 148)

सवाल : ये कौनसी सदी का वाक़िआ है?

जवाब : चौथी हिजरी सदी का (हवालै बाला)

सवाल : सरकार मदारपाक ख़ुरासान कब तशरीफ़ ले गए?

जवाब : तीसरी सदी के निस्फ़ आख़िर में तशरीफ़ ले गए

सवाल : हज़रत शाह दाना वली का नाम किया है?

Scanned by CamScanner

सवाल : उस वक़्त ख़ुरासान में कौन से मशहूर अल्लाह के वली मौजूद थे?

जवाब : अबुल अब्बास अहमद मसरुक़ रज़िअल्लाहु अनहु

सवाल : हज़रत अहमद मसरुक़ कहां पैदा हुए?

जवाब : ख़ुरासान के सूबे में (तज़का तुल औलिया) आपकी काफ़ी शेहरत थी ज़ाहिरी और बातिनी उलूम में कमाल हासिल था जब सरकार मदार ख़ुरासान पहुंचे तो अहले ख़ुरासान आपकी इनायत व मेहरबानी से फ़ाएदा हासिल करने लगे उन्ही फ़ैज़ पाने वालों में हज़रत मसरुक़ का नाम सरे फ़िहरिस्त है

सवाल : हज़रत क़ाजी शहाबुद्दीन रहमतुल्लाही अलैही का मज़ार शरीफ़ कहां है?

जवाब : ज़िला बाराबंकी मौज़ा बड़े गाऊं में एक तालाब के किनारे आपका मज़ार शरीफ़ है (सय्यदुल अक़्ताब)

सवाल : क़िदवाई शुयूख़ का तअल्लुक़ किस वली से है?

जवाब : हज़रत क़ाज़ी शिहाबुद्दीन मदारी रज़िअल्लाहु अनहु से (अनीसुल अबरार)

सवाल : आप कहां के रहने वाले थे?

जवाब : चंबलाई के रहने वाले थे जो लखनऊ के पास है (अनीसुल अबरार)

सवाल : हज़रत शाह दाना वली किस के ख़लीफ़ा हैं उनका मज़ार शरीफ़ कहां है?

जवाब : हज़रत शाह दाना वली हज़रत सरकार मदारपाक के ख़लीफ़ा हैं और उनका मज़ार शरीफ़ बरेली शरीफ़ में है

Scanned by CamScanner

मुबारक तारीख़ आई जिस्में हज किया जाता है आपने हज
जवाब : आपका नाम जलालुद्दीन है

सवाल : शाह दाना वली रहमतुल्लाह अलैह कहां के रहने वाले थे?

जवाब : बुख़ारा के रहने वाले थे (समरक़ंद के पास)

सवाल : आपने किस इलाक़े में तबलीग़ फ़माई?

जवाब : एमपी मध्य प्रदेश के इलाक़े गवालियर में आपसे मनसूब मस्जिद है जिसको दाना वली मस्जिद कहते हैं और एक मोहल्ला आपके नाम से मौजूद है

सवाल : आपको शाहदाना कियूं कहते हैं?

जवाब : सरकार मदारपाक जब शरीअत व तरीक़त की बातें बयान फ़रमाते थे तो बहुत ग़ौर से सुनते थे और राज़ की बात बहुत जल्द समझ जाते थे आपकी इस सिफ़त को देख कर सरकार मदारपाक ने फ़रमाया (जलालुद्दीन मर्दे दाना अस्त) दाना फ़ारसी ज़बान का लफ़्ज़ है जिसका माना है अक़्लमन्द होशयार उस दिन से लोग आपको शाहदाना कहने लगे (सय्यदुल अक़्ताब सफ़ा65)

सवाल : मेवात के इलाक़े में सरकार मदारपाक और उनके ख़ुल्फ़ा को सताने के लिए किन लोगों ने हमला किया और उनकी तादाद किया थी?

जवाब : ये बावन डाकू थे जिनके सरदार का नाम चौहर सद था जब उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो हज़रत क़ुत्बुल मदार ने उनका नाम इस्लाम नबी रख दिया

सवाल : जब इन लोगों ने हमला किया तो कौन सी करामत आप से ज़ाहिर हुई?

Scanned by CamScanner

जवाब : हमला करते ही वो लोग अंधे हो गए थे और वुजू का पानी लगाने से आंखें आगई थीं (इरफान कुत्बुल मदार वगैरा)

सवाल : जब सरकार मदार पाक इस्तंबूल पहुंचे तो कौनसी करामत ज़ाहिर हुई ?

जवाब : साहिबे नजमुल हुदा हज़रत निजामुद्दीन हसन तहरीर फ़रमाते हैं की जब आप तबलीग़ के लिए इस्तंबूल पहुंचे तो एक यहूदी आया और दीने मूसवी की तारीफ़ की और इस्लाम में कमियां निकालने लगा (मआज़अल्लाह) आप उसके हर सवाल का माकूल जवाब देते थे दौराने गुफ़्तगू कहने लगा की हमारे पैग़म्बर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़बूर की तिलावत फ़रमाते थे तो सारा आलम महव हो जाता था यहां तक की जंगली जानवर परिंदे आब व हवा सब ज़बूर मुक़द्दस सुनकर मदहोश हो जाते थे और तुम्हारे नबी पर नाज़िल हुआ है वो सारे सहीफ़ों और आस्मानी किताबों से अफ़ज़ल और आला है और पहले वाली किताबों का नासिख़ है और मैने तमाम बार उसे सुना मगर ऐसी बात क़ुरआन से सामने ना आई आपने फ़रमाया हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का मोजिज़ा मुझे तसलीम है और बेशक यही बात है जो तूने कही और बिला शक व शुबह क़ुरआने करीम सबसे अफ़ज़ल है ख़ुदाए वहदहू ला शरीक का कलाम है यहूदी ने एक सूखे हुए दरख़्त की तर्फ़ इशारा कर के कहा की अगर ये तुम्हारा क़ुरआन पढ़ कर सुना ए और तुम्हारे दीन की सच्चाई की गवाही दे तो मैं तुम्हारे दीन में शामिल हो जाऊंगा और तुम्हारे नबी का कलमा पढ़ लूंगा हज़रत क़ुतबुल मदार ने उस दरख़्त के करीब जाकर दो रकात नमाज़ अदा की और पन्जतन पाक के वसीले से दुआ की की या इलाहल आलमीन बातिल के सामने इस बंदे आजिज़ को सुख़रु करदे उसके

Scanned by CamScanner

बाद आपने बुलंद आवाज़ से कुलहु वल्लाह शरीफ़ की तिलावत फ़रमाई ख़ुदा की शान व कुदरत देखि ए दरख़्त भी आपके साथ कुरआन पढ़ने लगा यहूदी ये देख कर हैरान रह गया ओर इस्लाम में दाख़िल हो गया (ईशाअल्लाह इसके बाद हिस्सा सोम)

रहबर आरिफ़ां तुमपे लाखों सलाम
ए मदार जहां तुमपे लाखों सलाम

मिलने का पता

मेहदि ए मिल्लत स्टेशनरी

मोहम्मद पुर बहेड़ी ज़िला बरेली

ज़मीर जनरल स्टोर

मकन पुर शरीफ़ मदार बुक स्टाल मकन पुर शरीफ़

मदार बुक डिपो मकन पुर शरीफ़

Scanned by CamScanner

मनक़बत शरीफ़

कलाम :पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शह सय्यद महज़र अली क़िब्ला व क़ारी मदारी सज्जादै नशीन आस्तानै आलिया वक़ारिया मकन पुर शरीफ़

बसद ख़ुलूस बसद एहतराम पेश करें
चलो मदार के दर पर सलाम पेश करें

मिले जो इज़्न तो आक़ा दिलों के नज़राने
अदब से आपके दरपे गुलाम सलाम पेश करें

सभी ये आर्ज़ू रखते हैं हम ग़ुलामों में
हुज़ूर क़तुब जहां अपना नाम पेश करें

सहर मुरादों की पाते हैं सब यहां आकर
दुखों में डूबी हुई शाम पेश करें

पयामे दीन नबी बादे मर्ग भी यारों
ग़ुलाामों ज़िंदा वली गाम पेश करें

बहारें झूम उठें मुस्कुरा उठें कलयां
दर मदार पे एसा कलाम पेश करें

दर मदार पे महज़र उसी की क़ीमत है
हम अपनी आंखों के लबरेज़ जाम पेश करें

नोट : मज़ीद मालूमात के लिए किताबों का मुताला करें

तारीख़ ऐ मदारे आलम : अल्लामा अल्हाज सय्यद महज़र अली साहिब

Scanned by CamScanner

तकसीमकार

पीरे तरीकत हज़रत

सय्यद आशकार हुसैन साहब जाफ़री मदारी

पीरे तरीकत हज़रत सय्यद

सय्यद इज़हार हुसैन साहब जाफ़री मदारी

पीर ज़ादा

सय्यद अख़्यार हुसैन जाफ़री मदारी

सय्यद एज़ाज़ अहमद हलवी मियाँ जाफ़री मदारी

सय्यद मो.वसीम सामी मियाँ जाफ़री मदारी

सय्यद काशिफुल अनवार जाफ़री मदारी

सय्यद तहज़्ज़र अली जाफ़री मदारी

मौलान सय्यद तशरीक मियाँ जाफ़री मदारी

वसीम जाफ़री मिस्बाही मदारी

जाफ़री ग्राफिक्स

बहेड़ी। 7599267786

Scanned by CamScanner